

B.A. 3rd Semester (Honours) Examination, 2018 (CBCS)

Subject : Sanskrit

Paper : SEC-I

Time: 2 Hours

Full Marks: 40

The figures in the margin indicate full marks.

*Candidates are required to give their answer in their own words
as far as practicable.*

Instruction to Candidates

परीक्षार्थिनां कृते निर्देशः

प्रश्नपत्रेऽस्मिन् **Group-‘A’** and **Group-‘B’** इति विभागद्वयं वर्तते। प्रथमतः परीक्षार्थिभिः सावधानतया स्वपठित एको विभागे निश्चेतव्यः। ततश्च यथा निर्देशं प्रश्नाः समाधातव्याः।

এই প্রশ্নপত্রে **Group-‘A’** এবং **Group-‘B’** দুটি বিভাগ বর্তমান। পরীক্ষার্থীরা উল্লিখিত দুটি বিভাগের মধ্যে তাদের পঠিত একটি বিভাগ থেকে প্রশ্নগুলির উত্তর দেবেন।

Group-‘A’

BASIC SANSKRIT

1. अधोलिखितेषु प्रश्नेषु पञ्चानां प्रश्नानाम् उत्तरं देवनागरीलिपिमाश्रित्य सुरगिरा प्रदेयम्। 2×5=10
निम्नलिखित प्रश्नগুলির মধ্যে যে কোনো পাঁচটি প্রশ্নের উত্তর সংস্কৃত-ভাষায় দেবনাগরী লিপিতে লিখতে হবে।
 - (a) निम्नलिखितेषु पदेषु कस्यचित् पदद्वयस्य वचनं विभक्तिं च निरूपयत।
निम्नलिखित पदগুলির মধ্যে যে কোনো দুটি পদের বচন ও বিভক্তি নির্ণয় করো।
সূর্যস্য, মান্না, বারিষু, মণ্ডয়ম্।
 - (b) निम्नलिखितेषु द्वयोः द्वितीयाबहुवचने रूपं लिखत।
নিম্নলিখিত শব্দগুলির মধ্যে যে কোনো দুটি শব্দের দ্বিতীয়া-বিভক্তির বহুবচনের রূপ লেখো।
মুনি, নদী, দধি, যুস্মদ্।
 - (c) अधस्तनेषु द्वयोः लटि उत्तमपुरुष द्विवचने रूपं लेखनीयम्।
নিম্নলিখিত ধাতুগুলির মধ্যে যে কোনো দুটি ধাতুর লট-লকারের উত্তমপুরুষের দ্বিবচনগত রূপ লেখো।
ভূ, শ্ব, दा, लभ्।
 - (d) प्रदत्तेषु धातुरूपेषु द्वयोः पुरुषं वचनं च निर्दिशत।
নিম্নলিখিত ধাতুরূপগুলির মধ্যে যে কোনো দুটি ধাতুরূপের পুরুষ ও বচন নির্ণয় করো।
द्रक्ष्यति, प्रृणु, जानासि, पचेत्।
 - (e) ब्राह्मीलिपिमाश्रित्य पदद्वयं लिख्यताम्।
নিম্নলিখিত পদগুলির মধ্যে যে কোনো দুটি পদকে ব্রাহ্মীলিপিতে রূপান্তরিত করে লেখো।
कमलम्, सौरभम्, नगरी, प्रमाणम्।

- (f) उचितं पदं योजयित्वा रिक्तस्थानानि पूर्यन्तु।
 योग्य पदोंदर द्दररर शून्यस्थरन पूरण करु।
 (i) एते बरलकर: _____ । (पठन्ति/पठरमः)
 (ii) शिशुः चन्द्रं _____ । (दृश्यति/पश्यति)
- (g) ब्रह्मदत्तः कुत्र प्रतिवसति स्म? स कथं ग्ररमरन्तरं प्रस्थितः?
 ब्रह्मदत्त कुथरय बरस करत? से कुन थरररन्तरे प्रस्थरन कररेखिल?
- (h) ग्ररमे यरत्ररकरले ब्रह्मदत्तो मरत्रर कुमुपदिष्टः?
 थरमे गमन सडरये डर ब्रह्मदत्तके की उपदेश दिऐरेखिल?

2. अधोलिखितेषु प्रश्नेषु प्रश्नद्वयं समाधेयम्।

5×2=10

निम्नलिखित प्रश्नकुलिर मध्ये ये कुनो दूटि प्रश्नेर उतुतर दरओ।

- (a) निम्नलिखितेषु पञ्चपदानि व्यवहृत्य सरलेन संस्कृतेन वरक्यरनि रचयत।
 निम्नलिखित पदकुलिर मध्ये पुररररर पद ब्यबहरर कररे संस्कृतडरररय बरक्य गठन करु।
 कवयः, फलरनि, कलमेन, मरतरम्, वर्तते, गमिष्यरमि, पचति।
- (b) पञ्चरनरं वरक्यरनरं संशुधनं करुरुत।
 ये कुनो पुररररर बरक्य संशुधन कररे लेखु।
 (i) सधवः स्वभरवेन सरलः।
 (ii) गृहस्थाः अतिथिं सेवन्ति।
 (iii) वर्षरयरं डररुगः पिच्छलः भवति।
 (iv) सर्वे प्रजरः नृपं प्रशंसन्ति।
 (v) नरपत्युः आदेशः पालनीयः।
 (vi) अष्टरनि फलरनि आनय।
 (vii) मे मित्रः आगच्छति।
- (c) मरतृभरषयर अनुवरदो विधेयः।
 मरतृडरररय अनुवरद करु।
 “अथ तस्य तं निश्चयं ज्ञरत्वर, समीपस्थवरप्यरः सकरशरतु कर्कटमरदरय मरत्ररडभिहितं - वत्स ! अवश्यं यदि गन्तव्यं, तदेष कर्कटुडपि सहरयो भवतु। तदेनं गृहीत्वर गच्छ।” सुडपि मरतुरुवचनरदुभरभ्यरं परणिभ्यरं संगृह्य कर्पूरपूटिकरमध्ये निधरय पत्रमध्ये संस्थरप्य शीघ्रं प्रस्थितः।
- (d) ब्रह्मी लिरप्यरं स्वरवर्णरः लेख्यरः।
 ब्ररह्मी लिरपिते स्वरवर्णकुलि लेखु।

3. निर्देशानुसरं प्रश्नद्वयं समाधेयम्।

10×2=20

निर्देशरनुसररे ये कुनो दूटि प्रश्नेर उतुतर दरओ।

- (a) मरतृभरषयर अनुवरदो विधेयः।

मरतृडरररय अनुवरद करु।

उत्तीर्णः सरर्यकरलः। ‘जनशून्यं विस्तीर्णं प्ररन्तरम्। तडसर सरवर दिक् आच्छन्ना। तत्र असहररर एकर वधुः। सहरस कश्चिद् डम्भीरः कण्ठस्वरः श्रुतःतिष्ठ इति। प्रविशति पत्यर सह भीषणदर्शनः कश्चित् दस्युः। भयहीनर सर वधुः दस्युं वदति स्म - ‘पितः! तव जरमरतुः समीपं गच्छरमि। सङ्गिबिहीनरं डर कृपयर तत्र नय इति।’

- (b) संस्कृतभाषया अनुवादः करणीयः।
संस्कृत भाषाय अनुवाद करो।
এই বাগানটি সুন্দর। বাগানে সুন্দর সুন্দর গাছ ও লতা আছে। গাছে ও লতায় ফল ও ফুল দেখতে পাওয়া যাচ্ছে। সেখানে ভ্রমররা মধুর গুঞ্জন করছে। কোকিলের কুঁজনে বসন্ত সেখানে নিত্য বিরাজিত।
- (c) ब्राह्मी लिपिमाप्रित्य स्पर्शवर्णाः लेख्याः।
ब्राह्मी लिपिर अवलम्बने क-वर्ण থেকে ম-বর্ণ পর্যন্ত স্পর্শবর্ণগুলি লেখো।
- (d) “सर्पव्यापादनाद् रक्षितः” – अत्र कः सर्पव्यापादनात् कथं वा रक्षितः? इति पठितकथानकमनुसृत्य प्रतिपाद्यताम्।
“सर्पव्यापादनाद् रक्षितः”- এখানে কে সর্পদংশন থেকে কীভাবে রক্ষা পেয়েছিল, তা পঠিত কথানকের অনুসরণে বর্ণনা করো।

Group-‘B’

ETHICAL AND MORAL ISSUES

1. अधोलिखितेषु प्रश्नेषु पञ्च प्रश्नानामुत्तरं देवनागरीलिप्यां सरलया सुरगिरा प्रदेयम्। 2×5=10
নিম্নলিখিত প্রশ্নগুলির মধ্যে যে কোনো পাঁচটি প্রশ্নের উত্তর সরল সংস্কৃত ভাষায় দেবনাগরী লিপিতে লিখতে হবে।
- (a) धीमतां मूर्खाणां च कालः कथं गच्छति?
बुद्धिमान् व्यक्तिदेर ओ मूर्ख व्यक्तिदेर समय कीभावे व्यय हय?
- (b) केषु विश्वासो न कर्तव्यः?
कादेर विश्वास करा उचित नय?
- (c) कः यथार्थः पण्डितः?
के यथार्थ ज्ञानी?
- (d) को नाम हिरण्यकः? स कुत्र प्रतिवसति स्म?
हिरण्यक के? से कोथाय बास करत?
- (e) कल्याणकामिना पुरुषेण के दोषाः हातव्याः?
कल्याणकामी पुरुषेर केन दोषगुलि त्याग करा उचित?
- (f) वायसस्य नाम किम्? स कुत्र प्रतिवसतिस्म? कमपश्यत् सः?
बायसेर नाम की? से कोथाय बास करत? से काके आसते देखल?
- (g) शृगालस्य नाम किमासीत्? स कथं त्रस्तहृदयः अभवत्?
शृगालेर नाम की छिल? से केन भय करछिल?
- (h) स्वामिसदृशा एव भवन्ति भृत्याः – इति कस्येयमुक्तिः कमुद्दिश्य सा तत् लिख्यताम्।
स्वामिसदृशा एव भवन्ति भृत्याः – এই উক্তিটি काके উদ্देश্য করে কে বলেছে?
2. अधोस्तनेषु द्वयोः प्रश्नयोः समाधानं कर्तव्यम्। 5×2=10
নিম্নলিখিত প্রশ্নগুলির মধ্যে যে কোনো দুটি প্রশ্নের উত্তর দাও।
- (a) अनुवादो विधेयः –
मातृभाषाय अनुवाद करो :
शोकस्थान सहस्राणि भयस्थान शतानि च।
दिवसे दिवसे मूर्ढमाविशन्ति न पण्डितम्॥
अथवा,
भये वा यदि वा हर्षे सम्प्राप्ते यो विमर्शयेत्।
कृत्यं न कुरुते वेगान स सन्तापमानुयात्॥

(b) कस्यचिदेकस्य सरलसंस्कृतेन व्याख्या कार्या।

যে কোনো একটির সরল সংস্কৃত ভাষায় ব্যাখ্যা করো।

दातव्यमिति यदानं दीयतेऽनुपकारिणे।

देशे काले च पात्रे च तद्दानं सात्त्विकं स्मृतम्॥

अथवा,

अश्वः शस्त्रं शास्त्रं वीणा वाणी नरश्च नारी च।

पुरुषविशेषं प्राप्ता भवन्ययोग्याश्च योग्याश्च॥

(c) उचितं पदं समुचिते स्थाने योजयित्वा रिक्तस्थानानि पूरणीयानि।

(पुंसां, रामो, मृगाय, विपत्तिकाले, हेममृगस्य)

असम्भवं _____ जन्म,

तथापि _____ लुलुभे _____।

प्रायः समापन _____ ॥

धियोऽपि _____ मलिनीभवन्ति॥

(d) महात्मनां स्वभावसिद्धाः गुणाः आलोच्यन्ताम्।

মহাপুরুষদের স্বভাবসিদ্ধ গুণগুলি আলোচনা করো।

3. यथानिर्देशं प्रश्नद्वयं समाधेयम्।

10×2=20

যে কোনো দুটি প্রশ্নের উত্তর দাও।

(a) पठितकथामनुसृत्य चित्रप्रीवस्य आप्रित-वात्सल्यं प्रतिपाद्य 'त्रैलोक्यस्यापि प्रभुत्वं त्वयि युज्यते' - इत्युक्तेः सार्थकतां निरूपयत।

পঠিত কথার অনুসরণে চিত্রপ্রেমীর আশ্রিতদের প্রতি বাৎসল্য প্রতিপাদন করে 'ত্রৈলোক্যস্যপি প্রভুত্বং ত্বয়ি যুজ্যতে'- এই উক্তির সার্থকতা বিচার করো।

(b) कङ्कणस्य तु लोभेन - इत्यत्र लोभस्य अन्तिमां दशां वृद्धपथिककथामाधारीकृत्य वर्णयत।

কঙ্কণস্য তু লোভেন - এখানে লোভের চরম পরিণতি বৃদ্ধ-ব্যায় ও পথিকের কথার অবলম্বনে বর্ণনা করো।

(c) पाठ्यांशमनुसृत्य हितोपदेशस्य रचनाशैलीं प्रतिपादयत।

পাঠ্যাংশের অনুসরণে হিতোপদেশের রচনাশৈলী আলোচনা করো।

(d) न शब्दमात्राद् भेतव्यम् - कस्येदं वचनम्? स कथं प्रोतुः मनोव्यथां दूरीकर्तुं यतते? - इति शृगाल-दुन्दुभि-कथामुररीकृत्य विशदयत।

ন শব্দমাত্রাদ্ ভেতব্যম্ - এই উক্তিটি কে, কার উদ্দেশ্যে করেছে? সে কীভাবে শ্রোতার মনোব্যথা দূর করতে যত্নশীল? - শৃগাল-দুন্দুভি- কথার অনুসরণে বিস্তারিত আলোচনা করো।